सन्यासी का भिक्षा लेने का तरीका क्या था?
सन्यासी जी कुल 20 दिनों तक भिक्षा लिया करते थे। पर शर्त यह होती थी कि पहले दिन की भिक्षा को वे दूसरे दिन दुगुना लिया करते थे।

बीस दिनों तक दिए गए भिक्षा की कुल राशी कितनी थी?
सन्यासी जी को बीस दिनो तक दिए गए भिक्षा की कुल राशी दस लाख अड़तालीस हज़ार पाँच सौ पिचहत्तर रुपए थे।

राजा, मंत्री एवं राजभंडारी के चिन्ता का क्या कारण था?
राजा, मंत्री एवं राजभंडारी के चिन्ता का यह कारण था कि अगर सन्यासी जी को बीस दिनों तक भिक्षा दिया गया तो राजकोष खाली हो जाएगा।

अंत में सन्यासी जी ने अकाल पीड़ितों के लिए कितने रुपए लिये?
अंत में सन्यासी जी ने अकाल पीड़ितों के लिए 50,000 रुपए लिये।

उस जीव को कवि ने "कबाड़ी" क्यों कहा है?
उस जीव को कवि ने "कबाड़ी" इसलिए कहा है क्योंकि जिस प्रकार कबाड़ीवाला यहाँ-वहाँ घूम-घूमकर कूड़ा कहलाने वाले टूटे-फूटे सामान को खरीदता है उसी प्रकार यह जीव भी दुनिया भर का कूड़ा घर में भरता जा रहा है।

वह जीव क्यों सोने नहीं दे रहा है?
वह जीव रात भर गड़बड़ करके सोने नहीं दे रहा है।

वह जीव इधर-उधर खुर-खुर करके क्या ढूँढ़ रहा है?
वह जीव इधर-उधर खुर-खुर करके कोने ढूँढ़ रहा है।

बच्चों! बताओ, वह शरारत करने वाला जीव कौन है?
बच्चों! हमारा बताया गया जवाब है,
वह शरारत करने वाला जीव चूहा है।